B.A. (Hons) Part III
Philosophy - Paper V
Topic - Problem of Evil
Dr Sachidanand Prasad.
R.R.S. College, Mokama.

ईश्वरवादियों के अनुसार ईश्वर एक अनंत और व्यक्तित्वपूर्ण सत्ता है। फिर इनलोगों के अनुसार ईश्वर इस विश्व में निहित अथवा विश्वव्यापी तथा विश्व से परे अथवा विश्वातीत है। ईश्वर इस विश्व का स्रष्टा और विश्व ईश्वर की सृष्टि है। फिर ईश्वरवाद ईश्वर को सर्वशक्तिमान, शुभ और दयावान बतलाता है। ईश्वरवादियों के अनुसार ईश्वर ही सर्वोच्च सत्ता है। यहाँ एक प्रश्न यह उठता है कि जब ईश्वर सर्वोच्च एवं शक्तिशाली सत्ता है तो फिर इस विश्व में विभिन्न प्रकार के अशुभ क्यों हैं। विश्व में अशुभ होने का अर्थ यह होता है कि या तो ईश्वर ने जान-बूझकर अशुभ का निर्माण किया है या वह अशुभ को हटाना चाहता था परन्तु उसे हटाने की शक्ति उसमें नहीं थी। अब यदि मान लिया जाये कि जानबूझकर ईश्वर ने अशुभ का निर्माण किया है तो ऐसी स्थिति में ईश्वर को दयावान एवं शुभ नहीं कहा जा सकता है। यदि यह मान लिया जाये कि ईश्वर अशुभ को हटाना चाहता था परन्तु हटा नहीं पाया तो फिर ईश्वर को सर्वशक्तिमान नहीं कहा जा सकता है। इसप्रकार हमलोग यह देखते हैं कि ईश्वरवादियों के समक्ष अशुभ की समस्या एक बड़ी समस्या बन जाती है। ईश्वरवादियों ने इस समस्या का समाधान अपने ढंग से करने का प्रयास किया है।

साधारणतः अशुभ दो प्रकार का होता है।
① प्राकृतिक अशुभ ② नैतिक अशुभ।
प्राकृतिक अशुभ उस अशुभ को कहते हैं जो प्रकृति में विद्यमान है। जैसे - बाढ़, तूफान, ज्वालामुखी, अकाल इत्यादि। इसके बाद नैतिक अशुभ उस अशुभ को कहते हैं मनुष्य के द्वारा किये जाने वाले कार्यों से उत्पन्न होता है। हमलोग यह जानते हैं कि मनुष्य में संकल्प की स्वतंत्रता (Freedom of will) है जिसके कारण मनुष्य कर्म करने में स्वतंत्र है। इसप्रकार यह कहा जाता है कि नैतिक अशुभ वह है जो मनुष्य के कर्मों का फल है। उदाहरण के लिए, हिंसा, चोरी, डकैती इत्यादि। कुछ ईश्वरवादियों का कहना है कि चूंकि मानव ने संकल्प की स्वतंत्रता का दुरुपयोग किया जिसके कारण अशुभ का विकास हुआ। अतः कहा गया है कि नैतिक अशुभ के लिए मानव स्वयं जिम्मेवार है लेकिन प्राकृतिक अशुभ के लिए प्रकृति जिम्मेवार है। इसप्रकार ईश्वरवादियों ने अशुभ की व्याख्या निम्नलिखित ढंग से की है।
① अशुभ मानव संकल्प की स्वतंत्रता के दुरुपयोग का परिणाम है।
② प्राकृतिक अशुभ नैतिक अशुभ के लिए दण्डमात्र है।
③ प्राकृतिक अशुभ सामान्य में सहायक है।

(4) अशुभ, शुभ के मूल्य को बढ़ाने के लिए आवश्यक है।

(5) अशुभ, अपूर्ण शुभ है।

(6) अशुभ, अदृश्य, अज्ञात जीवों के लिए आवश्यक है।

(7) अशुभ मिथ्या है।

(8) अशुभ अनेक प्रत्ययों का मूल्य निश्चित करता है।

(9) अशुभ धर्म के विकास के लिए अनिवार्य है।

इसप्रकार हमलोग यह देखते हैं कि धर्मदर्शन में अशुभ की समस्या का समाधान ईश्वरवादियों ने किया और बतलाया कि मूलरूप से यही कहा जा सकता है कि अनैतिक प्राकृतिक अशुभ का प्रश्न है इसके लिए मनुष्य चाहे ही उत्तरदाई न हो लेकिन अनैतिक नैतिक अशुभ का प्रश्न है उसके लिए मनुष्य ही पूर्णरूप से जिम्मेदार है। मनुष्य ने अपनी ~~स्वतंत्र~~ संकल्प की स्वतंत्रता का दुरुपयोग किया इसके कारण इस संसार में अनेको नैतिक अशुभ विराजमान है।